अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तेरापंथ दर्शन (वर्ष : 2022) दिनांक : 17.12.2022

समय सीमा : 3 घंटा प्रथम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

तेरापंथ का इतिहास–80

प्र. 1 किन्हीं सत्तरह प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए– 17

आचार्य भिक्षु (कोई तेरह प्रश्नों का उत्तर दें)

(क) आगमानुसार चारित्र के कितने भेद हैं? तथा त्याग की अपेक्षा से श्रावक में कौन सा चारित्र होता है?

(ख) न्याय-मार्ग पर चलने वाले को भय की कोई परवाह नहीं करनी चाहिए। यह कथन किसने किससे कहा?

(ग) आचार्य भिक्षु ने सेठ हरजीमल जी द्वारा कपड़े के दान की प्रार्थना को अस्वीकार क्यों किया?

(घ) पाली में प्रहर रात्रि के पश्चात आचार्य भिक्षु से तत्व-चर्चा करने वाले समृद्ध व्यक्ति कौन-कौन थे?

(ङ) बाईस तीर्थंकर चातुर्याम धर्म का उपदेश देते थे, वे चार याम कौन-कौन से थे?

(च) मुनि खेतसीजी ने कहा–'आपको इस प्रकार झट से आहार त्याग नहीं करना चाहिए।' तब आचार्य भिक्षु ने क्या कहा?

(छ) आचार्य भिक्षु ने साधु-असाधु में एक अक्षर का अन्तर बताते हुए क्या कहा?

(ज) राणावास और सिरियारी में कितनी दूरी है? तथा आचार्य तुलसी ने सिरियारी में कब और कौन सा महोत्सव मनाया?

(झ) चेलाबास के यति हीरविजयजी किस विद्या के ज्ञाता थे? तथा उनके अनुसार स्वामीजी महाप्रस्थान कर कहां व किस रूप में उत्पन्न हुए?

(ञ) लिखत किसे कहते हैं?

(ट) आचार्य भिक्षु के अनुसार कौन सी करणी कभी निष्फल नहीं होती?

(ठ) आचार्य भिक्षु के अनुसार किसका विनय मुक्ति का हेतु बनता है?

(ड) किसी ने कहा–भीखणजी! मैं आपको साधु नहीं मानता फिर भी वस्त्र का दान दिया है, मुझे इसका शुभ फल होगा या अशुभ? तब आचार्य भिक्षु ने क्या कहा?

(ढ) 'इनके साथ हमारा कोई साम्भोगिक सम्बन्ध नहीं है, अतः वंदन करना नहीं कल्पता।' यह कथन किसने, किससे और किसके लिए कहे?

(ण) 'सच्चंसि धितिं कुव्वह' इस आगम वाणी का अर्थ क्या है?

आचार्य भारमलजी (कोई चार प्रश्नों के उत्तर दें)

(त) राजनगर में आचार्य भारमल जी रात्रिकालिन व्याख्यान फरमाते तब उनकी आवाज कहां तक सुनाई देती?

(थ) मुनि भारमल जी की दीक्षा कब व कहां हुई तथा उस समय उनकी अवस्था क्या थी?

(द) मुनि भारमलजी ने आचार्य भिक्षु से पृथक चातुर्मास कब व कहां किया?

(ध) यति जिनभद्रसूरि ने तेरापंथी साधुओं को प्रथम कोटि के साधु किस आधार पर बताया?

(न) आचार्य भिक्षु ने कहा–'मैं किसनोजी को अपने साथ रखने योग्य नहीं समझता, अतः तुम कहां रहना चाहते हो? यह निर्णय कर लो।' तब मुनि भारमलजी ने क्या कहा?

प्र. 2 किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्यों में दीजिए– 15

आचार्य भिक्षु (किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर दें)

(क) किसी ने कहा–भीखणजी! तुम जिन्हें असाधु मानते हो, उनको अमुक साधु कह कर क्यों पुकारते हो? तब आचार्य भिक्षु ने क्या कहा?

(ख) काचरी की कमी से कोई विवाह थोड़े ही रोका जाता है? आचार्य भिक्षु ने यह कथन क्यों और किस प्रसंग में कहे?

(ग) आचार्य भिक्षु ने शिथिलाचारियों की वृत्ति को 'धूर्त चोर' जैसी कैसे बताई? संक्षेप में स्पष्ट करें।

(घ) चर्चा किसे कहते हैं? बताते हुए स्वामी जी चर्चाओं का उल्लेख करें।

(ङ) भीखणजी ने दीक्षा से पूर्व अपने आपको कसौटी पर कसते हुए कौन सा प्रयोग किया?

आचार्य भारमलजी (कोई दो प्रश्नों का उत्तर दें)

(च) स्वामीजी ने बालमुनि भारमलजी को सर्प-उपद्रव अवस्था में देखकर क्या किया?

(छ) स्वामीजी ने संघ की सर्वतोमुखी प्रगति के लिए सर्वप्रथम कौन से दो कार्य किए?

(ज) आचार्य भारमलजी बालिकाओं को तत्त्वज्ञान सिखाने में प्राथमिकता क्यों देते थे?

आचार्य भिक्षु

प्र. 3 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 100 से 150 शब्दों में दीजिए– 12

(क) स्वामीजी की पद्यवाणी 'स्वामीजी के बाण' होते थे। स्पष्ट करें।

(ख) आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित 'आचार की चौपाई' में उस समय के साधु समाज के आचार शैथिल्य के मुख्य बिन्दु कौन-कौन से हैं? लिखें।

(ग) कोई तीन घटना प्रसंगों से सिद्ध करें कि स्वामीजी जनता के लिए 'आकर्षण के केन्द्र' बने हुए थे।

प्र. 4 सिद्ध करें कि आचार्य भिक्षु अध्यात्म-प्रेरणा के महान श्रोत थे। 15

अथवा

सिद्ध करें कि आचार्य भिक्षु का जीवन एक सैनिक का-सा जीवन था।

आचार्य श्री भारीमल जी

प्र. 5 आचार्य भारमलजी के संलेखणा तप का विवेचन करें। 6

अथवा

सिद्ध करें कि आचार्य भारमल जी एक कुशल लिपिकार थे।

प्र. 6 विभिन्न घटना प्रसंगों से स्पष्ट करें कि आचार्य भारमल जी संघ को एक 'अनुभवी शासक' के रूप में प्राप्त हुए थे। 15

अथवा

आचार्य भारमल जी और उदयपुर महाराणा के घटना प्रसंग का विस्तार से उल्लेख करें।

तेरापंथ-प्रबोध–20

प्र. 7 कोई तीन पद्यों की पूर्ति करें– 8

(क) बतीसै.....गीत सुप्यार हो।

(ख) सार्वभौम.....निखार हो।

(ग) प्रारम्भ्यो.....लार हो।

(घ) कुण जाणै.....द्वार हो।

(ङ) रघुरव सोचै.....सार हो।

प्र. 8 कोई तीन पद्यों को अर्थ सहित लिखिए– 12

(क) अंतिम मर्यादा-पत्र वाला पद्य।।

(ख) स्वामीजी की वचन-सिद्धि वाला पद्य।।

(ग) 'मर पूरा देस्यां तप जप स्यूं।' संकल्प शक्ति वाला पद्य।।

(घ) आचार्य भिक्षु की 'धर्म क्रान्ति' वाला पद्य।।